Vol 5 Issue 5 Feb 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra
Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University,
Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science &
Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University,
Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and
Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance
Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College
Commerce and Arts Post Graduate Centre
(BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate
College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review of Research
International Online Multidisciplinary Journal

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 5 | Feb - 2016

मानव भूगोल के संस्थापन में वाईडल डी ला ब्लाश का योगदान

Satyabir Yadav
Associate Professor, Dept. of Geography, Cum incharge,
Government College for Women, Pali, District-Rewari, Haryana.

सारांश –

वाइडल डी ला ब्लाश को मानव भूगोल का संस्थापक माना जाता है। इनका जन्म सन् १८४५ में पेरिस में हुआ। इन्होने स्नातक स्तर की शिक्षा इतिहास भूगोल एवं दर्शन विषयों सहित पेरिस के इकोल नार्मेल सुपिरियर (म्बवसम छवतउंस ैनचमतपमनतमद्ध नामक प्रतिष्ठित संस्थान से सन् १९६५ में प्राप्त की । कुछ समय तक एथेन्स में स्थित फ्रेंच विद्यालय में अध्यापक रहे। सन् १८७२ में भूगोल में अपना शोध प्रबन्ध पूरा करने के लिए पेरिस लौट आये। पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्होने भूगोल का अध्यापन (१८७२-१८७७)नैन्सी विश्वविद्यालय में और उसके बाद उन्होनें (१८७७-१८९५ में) इकोल नार्मेल सुपिरियर नामक संस्थान पेरिस में किया। इनकी नियुक्ति एवं पदोन्नति सन् १८९६ में सोरबॉन विश्वविद्यालय , पेरिस की बवससमहम कम तिंदबम नामक शिक्षण संस्थान में इतिहास एवं भूगोल विभाग के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पद पर हुई। वह भूगोल के आचार्य के रूप में नियुक्त होने वाला पहला फ्रांसिसी भूगोलवेता था।

प्रस्तावना :–

सन् १८९६ से १९१८ (मृत्यु पर्यन्त तक) वे सोरबॉन विश्वविद्यालय में भूगोल के प्रोफेसर रहे। सन् १८९६ में ब्लाश द्वारा यह पद ग्रहण करने से पहले तक फ्रांस में भूगोल को एक सहायक विषय के रूप में मान्यता मिलती रही। लेकिन उन्होने अपने पद ग्रहण के समय दिये गये प्रथम भाषण में ही कहा कि 'भूगोल केवल ऐतिहासिक घटनाओं को समझाने वाला नहीं है बल्कि यह विषय अपने आप में स्वतन्त्र एवं महत्वपूर्ण ज्ञान की शाखा है। उन्होने अपने अथक प्रयासों से समय-समय पर फ्रांस के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा की और पहली बार फ्रांस का भौगोलिक प्रादेशिक विभाजन किया। ग्रामीण बस्तियां , भूमि से लगान एवं ग्रामीण क्षेत्र में उपयोग आदि तत्व उनके प्रादेशिक चिन्तन का आधार थे। वे भौगोलिक शोध एवं विधि तंत्र के विकास हेतू सोरबॉन पेरिस में जीवनपर्यन्त कार्य करते रहे। उन्होने अपने अनेक शिष्यों को भूगोल में प्रशिक्षित किया जो बाद में फ्रांस के विभिन्न विश्वविद्यालयों में भूगोल के प्रोफेसर बने। प्रोफेसर ब्लाश के प्रयासों से ही फ्रांस में धीरे-धीरे संयुक्त इतिहास एवं भूगोल विभागाध्यक्ष के स्थान पर स्वतंत्र भूगोल विभागों एवं विभागाध्यक्षों की स्थापना हुई।

रचनाएं एवं ग्रन्थः–

ब्लाश एक बहुप्रतिभाशाली भूगोलवेता था। उन्होने समय -समय पर विभिन्न पत्रिकाओं में भूगोल पर अनेक, शोध प्रपत्र एवं लेख लिखे। उनकी महत्वपूर्ण रचनाएं एवं ग्रन्थ निम्नलिखित थे-

(१) यूरोप के राज्य एवं राष्ट्र, १८८९

(२) भूगोल की वार्षिक शोध पत्रिका (Annals de Geographie), 1891

(३) यूरोप की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक मानचित्रावली १८९४

(४) फ्रांस का भूगोल (Tableau de La Geograhic de la France, 1905)
(५) पूर्वी फ्रांस का भूगोल (La france de la East, 1917)
(६) मानव भूगोल के सिद्धांत, १६२१ (मृत्युपरांन्त)
(प्रकाशन उनके दामाद डी –मार्तोनी नामक भूगोल वेता द्वारा करवाया गया ।)

शोध प्रपत्र –
(१) सामाजिक तत्वों की भौगोलिक दशाएं, १६०२
(२) जीवन निर्वाह रीतियां (Modes of life, 1911)
(३)भूगोल की अनूठी विशिष्टताएं(Distinctive Characteristics of Geography)

ब्लाश ने सन् १६०३ ई० में ज्यॅाग्राफी डि ला फ्रांस (फ्रांस का भूगोल) शीर्षक पुस्तक की रचना की। इस में भौतिक भूगोल, मानवीय क्रियांए एवं फ्रांस की अनेक इकाइयों में विभाजन तथा वर्णन है। यह भूगोल की उत्तम पुस्तक मानी जाती है। इसमें मानव का प्रकृति पर प्रभाव का वर्णन किया गया है। ब्लाश के अनुसार भूगोल प्रकृति एवं मानव के अर्न्तसम्बंधों का विज्ञान है। इसी आधार पर उन्होने अफ्रिका, एशिया, यूरोप एवं भू मध्यसागरीय जनसंख्या समूहों का वर्णन किया है । मानव भूगोल के सिद्धान्त (Principles de Geographie Humaine) में जनसंख्या, मानव अधिवास के प्रकारों एवं वितरण का वर्णन है। इसमें उन्होने मानव भूगोल के लक्ष्य एवं उद्देश्यों,क्षेत्रीय एकता (Terrestrial unity) मानव तथा पर्यावरण के अर्न्तसम्बन्ध का वर्णन किया है। मानव भूगोल एक प्राकृतिक विज्ञान है सामाजिक नही। परिवहन के साधनों सांस्कृतिक प्रदेश तथा नगरों के विकास एवं वितरण पर प्रकाश डाला गया है। ब्लाश के अनुसार प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दृश्यों के बीच प्रकृति और मानव में इतना घनिष्ठ सम्बन्ध होता है कि मानव पर प्रकृति का तथा प्रकृति पर मानव के प्रभाव में अन्तर करना कठिन होता है। उदाहरण के लिए मध्यकाल में फ्रांस तथा प्रश्चिमी यूरोपीय समाज में ज्यादातर लोग अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर करते थे। फ्रांस में औद्योगिक क्रांन्ति के बाद वहां का परम्परागत भौतिक स्वरूप परिवर्तित हो गया। रेल मार्गों ,नहरों, सड़कों, और औद्योगिक संकुलों ने परम्परागत कृषि अर्थव्यवस्था का ह्रास करना शुरू कर दिया। नये सस्ते और तीव्र गति से चलने वाले यातायात के साधनों के आधार पर औद्योगिकरण को बढावा मिला तथा वहां बड़े पैमाने पर उत्पादन की शुरूआत होने से विस्तृत बाजार विकसित होने लगे। उन्होनें रैटजल की निश्चयवादी विचारधारा को अस्वीकार कर दिया तथा संभववाद की नई विचारधारा को जन्म दिया। ब्लाश के अनुसार प्राकृतिक परिस्थितियां अनेक संभावनाओं को जन्म देती हैं। मानव अपनी बौधिक क्षमता के अनुसार अपनी आवश्यकतानुसार अपने निवास्य का गठन करता है जिसे संभववाद कहते हैं।

ब्लाश अपने जीवन के अन्तिम दिनों में इस निष्कर्ष पर पहुंचा था कि औद्योगिक विकास के कारण फ्रांस के लोगों के जीवन में औद्योगिक विकास से पहले जो श्रेष्ठता थी उसमें दिन प्रतिदिन गिरावट आ रही है। ब्लाश के प्रयासों के फलस्वरूप सन् १६२१ तक फ्रांस में भूगोल के १६ विभाग कार्यरत थे। प्रत्येक विश्वविद्यालय में वाइडल डी ला ब्लाश के शिष्य ही भूगोल विभागाध्यक्ष पद पर नियुक्त थे। वाइडल डी ला ब्लाश को मानव भूगोल का जनक माना जाता है जिसने सम्भववाद की विचारधारा का प्रसार किया।

ब्लाश का भौगोलिक योगदान (Geographical contribution of Blache)

वाइडल डी ला ब्लाश को आधुनिक फ्रांसीसी भूगोल का संस्थापक माना जाता है। उनके प्रमुख भौगोलिक योगदान निम्नलिखित हैं:–

(1) प्रादेशिक अध्ययन (Regional study)

ब्लाश का विचार था कि लघु प्रदेश (पेज) भौगोलिक अध्ययन में भूगोलवेताओं को प्रशिक्षित करने के लिए आदर्श इकाई होते हैं। फ्रांस में लघु प्रदेशों के अध्ययन की परम्परा आज भी प्रचलन में है। अनेक फ्रांसीसी भूगोलवेता आज भी शोध कार्य के लिए लघु प्रदेशों को सर्वोतम क्षेत्र मानते हैं। वृहद प्रदेश स्तर के प्रादेशिक अध्ययन की उपयोगिता नियोजन के लिए हो सकती है जिसके लिए उन्होने बड़े प्रदेश के अध्ययन की योजना प्रस्तुत की थी। ब्लाश के अनुसार फ्रांस के छोटे –छोटे क्षेत्र जिन्हें पेज के नाम से पुकारा जाता है वे भौगोलिक अध्ययन का आधार होना चाहिए। ब्लाश नदी बेसिन की प्राकृतिक इकाई को प्रादेशिक इकाई मानने के विरूद्ध था। उनका विचार था कि नदी विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों में से होकर बहती है तथा उसी कारण नदी बेसिन में उद्गम से मुहाने तक विभिन्न प्रकार की मिट्टी ,कृषि,धरातल तथा सिंचाई की विभिन्नता के कारण लोगों का रहन सहन, खान–पान , अर्थव्यवस्था प्रथायें आदि भी भिन्न होते हैं। अतः उन्होने भौगोलिक अध्ययन के लिए सबसे छोटी इकाई पे (pay) के विस्तृत अध्ययन पर जोर दिया। उपरोक्त वर्णन से पता चलता है कि वाइडल–डी–ला ब्लाश भूगोल में प्रदेश या लघु प्रदेश ;उपबतव त्महपवदद्ध को भौगोलिक अध्ययन का आधार मानकर किये जाने वाले भौगोलिक अध्ययन का समर्थक था।

(2) सार्वभौमिक एकता (Terrestrial unity)

ब्लाश ने १६ वीं सदी के अन्तिम दशक में सार्वभैमिक एकता को सुव्यवस्थित विधि से प्रस्तुत किया। उसके अनुसार मानव भूगोल के तथ्य पार्थिव भूगोल से सम्बन्धित हैं, जिनकी व्याख्या केवल उन्ही तथ्यों की सहायता से की जा सकती है। ये प्रत्येक स्थान पर परिवेश से सम्बधित हैं।

The phenomena of human geography are related to terrestrial unity by means of which alone

they can be explained. They are every where related to the environment itself.

ब्लाश का विचार था की कोई भी भौगोलिक परिघटना एकाकी रूप से घटित नहीं होती बल्कि उसका सम्बन्ध अन्य परिघटनाओं से होता है जिसकी व्याख्या करना काफी जटिल कार्य है। उन्होनें बताया कि वनस्पति का सामान्य रूप ही किसी प्रदेश का प्रमुख लक्षण है। किसी प्रदेश के वृक्षों, झाड़ियों एवं घास आदि के आकार ,रंग परिणाम आदि से ही भूखण्ड की सामान्य विशेषता का पता लग जाता है। उदाहरण के लिए जिस स्थान पर नागफनी के पौधे,कीकर, बबूल, तथा शुष्क झाड़ियां पाई जाती हैं वह विश्व के मरूस्थलीय भूखण्डों की विशेषता को प्रकट करता है जहां प्राकृतिक वर्षा की कमी पायी जाती है। तथा जिस स्थान पर ऊंचे-ऊंचे शंक्वाकार वृक्ष हों वह ऊंचे पर्वतीय प्रदेशों की विशेषता को प्रकट करता है जहां वर्षा भी अधिक होती है। जहां सुन्दरी नामक वृक्ष हो वह डेल्टाई प्रदेश की विशेषता को प्रकट करता है आदि।

ब्लाश का विचार था कि मानव एक क्रियाशील प्राणी है जिसमें पर्यावरण कोपरिवर्तित करने की महान शक्ति है। अतः हम प्रकृति को सर्वशक्ति शाली नहीं कह सकते हैं उदाहरणतः पहले गेहूं का उत्पादन भूमध्यसागरीय क्षेत्र में किया जाता था परन्तु आज मानव के प्रयत्नों से यूरोपीय देशों में इसका उत्पादन प्रति एकड़ भूमध्य सागरीय देश की अपेक्षा अधिक होती है । ब्लाश के शब्दों में ''प्रकृति कभी एक सलाहकार से अधिक नहीं है।''

वाइडल डी ला ब्लाश के पार्थिव एकता के सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी पर कोई भी वस्तु पूर्णत स्वतन्त्र नहीं है। अर्थात पृथ्वी पर किसी एक घटना का सम्बन्ध अन्य परिघटनाओं से होता है। उदाहरण के लिए हिमालय पर्वत माला का अध्ययन विश्व के अन्य मोडदार पर्वत प्रणालियों को समझे बिना अधूरा ही रहेगा। इसे ही पार्थिव एकता अर्थात सम्पूर्ण पृथ्वी की एकता कहते हैं।

(3) सम्भववाद (possibilism)

वाइडल डी ला ब्लाश को संभववादी विचारधारा का जनक कहा जाता है। उसके अनुसार प्राकृतिक पर्यावरण तथा परिस्थितियां अनेक सम्भावनाओं को प्रदान करती है। मानव अपनी बुद्धी के बल पर तथा कार्य कुशलता के आधार पर विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी का विकास करता है और प्राकृतिक शक्तियों पर विजय पाने की संभवानायें खोजता है। मानव ने नहरों तथा ट्यूबवैलों द्वारा शुष्क प्रदेशों में सिंचाई की सहायता से कृषि विकास किया। प्राकृतिक खनिजों का उपयोग करके औद्योगिक विकास किया, नगरों तथा परिवहन मार्गो का विकाश किया है। ये सभी प्रकृति पर मानव की विजय के उदाहरण हैं। ब्लाश का विचार था कि केवल प्रकृति ही समस्त मानवीय क्रियाओं की पूर्ण निर्धारक नहीं है बल्कि मानव अपनी बुद्धी कौशल,तथा शक्ति के आधार पर प्राकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त करने की संभावनायें खोजता है।

4. भूगोल एक विशिष्ट विज्ञान है

ब्लाश के अनुसार भूगोल एक विशिष्ट विज्ञान है जो पृथ्वी की उस सतह पर स्थित समष्टि का अध्ययन करता है जहां स्थल मण्डल जल मण्डल तथा वायुमण्डल एक साथ मिलते है। अतः भूगोल मानव एवं प्रकृति के अटूट सम्बन्धों का वर्णन करता है जो लाखों वर्षों से चले आ रहे हैं। प्राचीन काल से ही मानव और प्रकृति ने एक दूसरे को प्रभावित किया है। मानव प्रकृति के साथ अनुकूलन भी करता है तथा अपनी सुविधा अनुसार प्रकृति में परिवर्तन भी करता है । मानव ने पहाड़ों को काटकर आने जाने के मार्ग बनाये हैं वह नदियों के प्रवाह मार्ग पर वांध बनाकर नदियों के प्रवाह को मोड़कर नहरों द्वारा शुष्क क्षेत्रों में सिंचाई करता है। मानव ने वनों को काटकर कृषि भूमि तैयार की है। इस तरह भूगोल मानव एवं प्रकृति के अन्तसम्बन्धों का अध्ययन करने वाला विशिष्ट विज्ञान है। अतः भूगोलवेताओं द्वारा प्राकृतिक एवं मानवीय दशाओं के सहसम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है।

वाइडल डी ला ब्लाश की संकल्पनायें:-

प्रसिद्ध भूगोलवेता ब्लाश ने निम्न लिखित भौगोलिक संकल्पनायें प्रस्तुत की।

(१) भूगोल पृथ्वी के दृष्यों की एकता (unity of phenomena) को मानता है। पार्थिव दृष्यों की एकता से अभिप्राय है कि प्राकृतिक कारक एक दूसरे पर निर्भर व अन्तर्सम्बन्धित हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि विश्व की सभी वस्तुऐं एवं तत्व चाहे वे जड़ हों या चेतन एक दूसरे से सम्बंधित हैं।

(२) भूगोल प्रकृति और मानव के बीच परस्पर सम्बन्धों का अध्ययन स्थानिक कारकों के आधार पर करता है।

(३) भूगोल प्राकृतिक शक्तियों (विशेषकर जलवायु एवं वनस्पति) का मानव पर प्रभाव का अध्ययन करता है।

(४) भूगोल धरातल पर पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के तत्वों की परिभाषा और उनको वर्गीकृत करने के लिए वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करता है।

(५) भूगोल प्राकृतिक पर्यावरण के तत्वों पर मानव के प्रभाव का अध्ययन करता है।

(६) भूगोल क्षेत्रीय विशेषताओं तथा मानव प्रकृति के यह सम्बन्धों का वर्णन करता है।

मानव भूगोल के तत्व (Elements of Human Geography)

वाइडल डी ला ब्लाश ने मानव भूगोल के विषय क्षेत्र में निम्नलिखित तत्वों को सम्मिलित किया है

१ जनसंख्या का वितरण, घनत्व एवं वृद्धि।

२ आव्रजन।

३ प्रमुख प्रजातिगत इतिहास।

४ मानव के जीवन निर्वाह के प्रमुख साधन।

५ जनसंख्या वृद्धि के कारण।

६ मानव द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण के तत्वों के साथ अनुकूलन।
७ मानव द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण के तत्वों के साथ अनुकूलन।
८ मानव की सभ्यताओं के विकास का इतिहास।
९ मानव द्वारा प्रयुक्त प्राचीन काल से आधुनिक काल तक परिवहन के साधनों का प्रयोग (पैदल, पशुपरिवहन, वर्तमान में रेल परिवहन , सड़क परिवहन, वायुपरिवहन एवं सामुद्रिक जहाज आदि परिवहन)।
१० विभिन्न नगरों का उद्भव व विकास।

REFERENCES:-

1. Blache de la , (1926) Principles of Human Geography, London.
2. Harvey, D.W. (1967), Models of the evolution of spatial patterns in human geography, in Chorley, R.J. and Haggett, P.(Eds.) Models in Geography, London.
3. Thrift, N. (1977) Time and theory in human geography: Part-1, Progress in Human Geography, Vol. – 1.
4. Fleure, H.J. Human Geography in Western Europe, London, 1918.
5. Fien, J. (1983) Humanistic geography, in Huckle, J. (Ed.) Geographical Education: Reflection and Action, Oxford: Oxford University Press.

Satyabir Yadav
Associate Professor, Dept. of Geography, Cum incharge
Government College for Women, Pali, District-Rewari, Haryana.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org